OM-10- PAGE-5-6-7-8_Layout 1 27-Jul-21 1:51 PM Page 2

हमने देखा... आध्यात्मिक फरिश्ता इस धरा पर

फरिश्ते का मिसाल दिया जाता है कि कहीं भी कोई कार्य करना और वहीं पर भूल जाना, उनकी उड़ान हमेशा आध्यात्मिक ही रहती है, तो ऐसा एक फरिश्ता मधुबन में भी था दादी जी के रूप में... जिसने फरिश्ते की सम्पूर्ण परिभाषा सबके सामने रखी। जैसे वो हल्की थीं, लाइट थीं, लाइट मूड था, उनसे जब कभी, जो कोई उनसे मिला, अपनी कठिनाइयों को भूल हल्का हो गया, न सिर्फ हल्का, किन्तु उसने दूसरों को हल्का करने की कला सीख ली। वो भी दादी के आदर्शों पर चल दूसरों को मदद करने में जुट गया।

सबसे ऊपर था योग का महत्व दादी के जीवन में

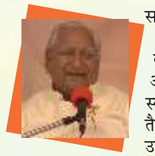

सन् 1973 में दिल्ली के रामलीला मैदान में दो सप्ताह के आध्यात्मिक मेले के आयोजन के लिए सरकार से स्वीकृति मांगी गई। सारी तैयारियाँ 14 नवम्बर के उद्घाटन कार्यक्रम के लिए हो चुकी थीं। 12 नवम्बर के समाचार-पत्रों में आया कि रशिया(यू.एस.एस.आर.) के राष्ट्रपति ब्रेजनेव का अभिनन्दन 19 नवम्बर को रामलीला मैदान में किया जायेगा। (1949 में हिन्दू संस्था द्वारा जब ऐसे ही एक मेले का कार्यक्रम बना, तो किसी शासकीय कार्यक्रम के कारण उसे स्थगित कर दिया गया था) दादी जी ने तुरंत ही 24 घंटे की योग-तपस्या का कार्यक्रम रखा और उन्होंने कुछ वरिष्ठ भाई-बहनों को डॉ. शंकर दयाल शर्मा के पास सार्वजनिक अभिनन्दन कार्यक्रम के स्थान को बदलने का आग्रह करने के लिए भेजा। डॉ. शर्मा ने अपने स्वागत समिति को इकट्ठा किया। यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात थी कि उन्होंने तुरंत ही सार्वजनिक कार्यक्रम को लाल किला मैदान में रखा और आध्यात्मिक मेला अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुरूप आयोजित किया गया। दिल्ली उच्च न्यायालय के एक वरिष्ठ वकील ने कहा "अवश्य ही आपके पीछे कोई ऐसी आध्यात्मिक शक्ति कार्य कर रही है, जिसके कारण भारत सरकार ने आपके आग्रह को स्वीकार किया"।

- राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर,महासचिव,ब्रह्माकुमारीज।

करनकरावनहार करा रहा है इस उक्ति को किया सार्थक

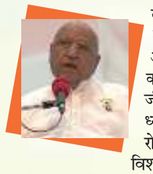

दादी जी दैवी परिवार के एक-एक सदस्य को बहुत ही महत्वपूर्ण और खास समझती थीं। उन्होंने कभी किसी के अवगुण नहीं देखे, बल्कि सभी की विशेषताओं की सराहना करती रहीं। जब भी मधुबन में कोई ग्रुप आता था तो दादी जी सभी के रहने की व्यवस्था तथा उनकी संतुष्टता का पूरा ध्यान रखती थीं। उन्होंने दैवी परिवार का मुखिया होने का रोल बखूबी निभाया। दादी जी पूर्णतः निरहंकारी थीं। इतने विशाल आध्यात्मिक संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में अपने अधिकारों का मानवीय सद्भावना के साथ इस्तेमाल करती थीं। वह हमेशा याद कराती थीं कि यह कार्य बाबा का है और वो करा रहा है। उन्होंने बाबा पर दृढ़ निश्चय रख एवं समर्पित होकर सभी परिस्थितियों को पार किया। दादी ने शांतिदूत के रूप में कई देशों की यात्राएं कीं और वहाँ के प्रशासकों से मिलकर उन्हें शांति संदेश दिया। दादी से मिलकर सभी को पवित्र प्रेम की भासना आती थी। वो सचमुच एक महान आध्यात्मिक नेता थीं। **- ब्र.कु. बृजमोहन,अतिरिक्त महासचिव,ब्रह्माकुमारीज।**

स्वयं भगवान करते जिनकी महिमा

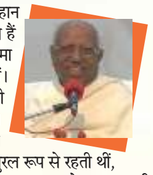

इस संसार के लोग महान पुरुषों की महिमा करते हैं परंतु दादी जी की महिमा स्वयं भगवान करते हैं। ईश्वरीय सेवा में ही उन्हें सुख भासता था। वे अति सरल, साक्षी व समर्पण भाव में नैचुरल रूप से रहती थीं, यही उनकी प्रसन्नता का राज़ था। वे जब यज्ञ की मुख्य प्रशासिका बनीं तब केवल 150 सेवाकेन्द्र थे और जब उन्होंने इस संसार से विदाई ली तो 8000 सेवाकेन्द्रों का विशाल वटवृक्ष चारो ओर अपनी शीतल छाया प्रदान कर रहा था।

- ब्र.कु. करुणा,मल्टीमीडिया चीफ,ब्रह्माकुमारीज।

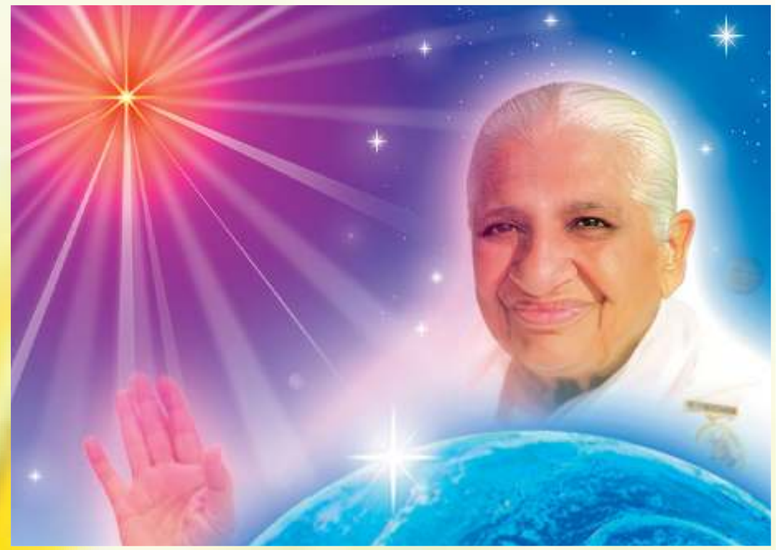

समझो, आज ही वो पहला दिन है

मेरा अलौकिक जन्म नौ वर्ष की आयु में हुआ, परन्तु इस जन्म को श्रेष्ठता प्रदान करने वाली आदरणीय दादीजी थीं। मैंने दादीजी को कई रूपों में अनुभव किया। लेकिन अधिक उन्हें मैं अपनी विशेष टीचर के रूप में देखती थी। उन्होंने मुझे हर प्रकार की ट्रेनिंग दी। एक अच्छी विद्यार्थी, एक अच्छी शिक्षिका, एक अच्छी प्रशासिका, एक अच्छी ट्रेनर के लक्षण क्या हैं, यह सब दादीजी में दिखाई देते थे। मैं उन्हें ऑब्ज़र्व किया करती थी। दादीजी का भी मेरे साथ बहुत प्यार था। दादीजी की एक विशेषता थी कि वे कभी भी किसी बात को असम्भव नहीं समझती थीं और न ही दूसरों को समझने देती थीं। एक बार कोलकाता में पहला-पहला बहुत बड़ा मेला लगा था, दादीजी वहाँ मेले की तैयारी के लिए गई थीं। मेरा सौभाग्य था कि मैं दादीजी के साथ थी। यह बात सन् 1974 की है। मेले में प्रेस कॉन्फ्रेन्स रखी गई। उसका हैण्ड आउट बनाना था। दादीजी ने मुझे कहा कि आशा तुम लिखो। मैंने कहा, दादीजी मैंने आज तक नहीं लिखा है। दादीजी सिखाने की भावना से गंभीर होकर बोलीं- कोई तो दिन होगा जो तुम पहली बार लिखोगी, वो दिन समझो आज ही पहला दिन है। फिर मैंने वो हैण्ड आउट हिन्दी और अंग्रेजी में तैयार किया और दूसरे दिन वह प्रकाशित भी हुआ जिससे मुझे प्रसन्नता तो मिली पर साथ-साथ दादी जी ने वो बीज भी बो दिया कि हिम्मत रखोगे तो बाबा मदद करेगा।

- राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,निदेशिका,ओ.आर.सी.।

समय की अद्भुत प्रज्ञा थी उनमें

पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा ने जब पार्थिव जगत् से विदाई ली तो सहस्र ब्रह्मा वत्सों ने खग्रास सूर्य ग्रहण की अनुभूति की जो संस्थान के प्रति एक क्षणिक मनोभाव थे, परन्तु शीघ्र ही कुछ पलों में दादी प्रकाशमणि जी ने नील गगन के मुक्तांगन में प्रवेश किया तो लगा कि सूर्य-रश्मियाँ उन्हें रथ पर लेकर आई हैं, प्रत्येक में नयी आशा का संचार हुआ।

दादी जी ने प्रधान होते हुए सुंदर संचालन किया कि यज्ञ की प्रत्येक इकाई स्वयं को प्रधान समझती है। यह वो विश्वास था जो दादी जी को प्रत्येक के प्रति था। समय की उनमें अद्भुत-प्रज्ञा थी, जो हर कार्यक्रम में उनकी निर्धारित समय से पूर्व की उपस्थिति देखकर ही समझा जा सकता था। वाक-शक्ति और निर्णय-प्रज्ञा सराहनीय थी। इतने विशाल वैश्विक परिवार में हर एक की बात को सावधानी से सुनकर, परशीलन करके समयोचित निष्पक्ष निर्णय देते मैंने अनुभव किया है। **- राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बसवराज,सम्पादक,'विश्व नव निर्माण' मासिक पत्रिका,हुबली एवं निर्देशक ब्रह्माकुमारीज हुबली क्षेत्र।**

अपने आप में सम्पूर्ण थीं दादी

दादी जी प्रेम, शक्ति और नम्रता का एक अद्वितीय व्यक्तित्व थीं। जब भी मैं अपने आप को दादी जी के सम्मुख पाता था, विशेष ही चमत्कार होता था। सभी प्रश्नों, उलझनों का हल होता था दादी जी की शक्तिशाली दृष्टि, अपनापन और प्रेम से भरपूर मुस्कान में। सदा सभी के गौरवमय भविष्य और सुषुप्त शक्तियों की ओर ध्यान दिलाना- यही दादी के शब्दों का सार होता था। दादी जी मार्गदर्शन करती थीं, आज्ञा नहीं। हमें लक्ष्य और अदर्शों की ओर अग्रसर होने की मधुर प्रेरणा देती थीं। दादी जी तो अपने आपमें ही सम्पूर्ण थीं, समस्त संसार का चित्रण कर रही थीं। **- डॉ. प्रताप,निर्देशक,ग्लोबल हॉस्पिटल,माउण्ट आबू।**

नई दिल्ली। अश्विनी वैष्णव,यूनियन मिनिस्टर ऑफ रेलवेज़,कम्युनिकेशन्स, इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी,भारत सरकार को ब्रह्माकुमारीज़ के ईश्वरीय सेवाओं की रिपोर्ट देते हुए ब्र.कु. प्रकाश चन्द,माउण्ट आबू। साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय,कार्यकारी सचिव,ब्रह्माकुमारीज व ब्र.कु. शिविका,संयोजिका,शिक्षा प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज,माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. शैलेष,बीकारो।

विजापुर-गुजरात। जगदम्बा मणि स्पीरिचुअल पार्क के डायरेक्टर ब्र.कु. मनीष को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. गंगाधर,संपादक,ओमशान्ति मीडिया,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. सरिता बहन तथा अन्य।

नई दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज के ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी देने के पश्चात् रामचन्द्र प्रसाद सिंह,यूनियन मिनिस्टर ऑफ स्टील,भारत सरकार को प्रसाद देते हुए ब्र.कु. प्रकाश चन्द,माउण्ट आबू व ब्र.कु. मृत्युंजय,कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज। साथ हैं ब्र.कु. शिविका,संयोजिका,शिक्षा प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज,माउण्ट आबू तथा ब्र.कु. शैलेष,बीकारो।

पुणे-महा। राज भवन में आयोजित 'स्त्री शक्ति पुरस्कार' समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित एवं पुरस्कृत करने के पश्चात् महाराष्ट्र एवं गोवा के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता।

गुवाहाटी-असम। नवनिर्वाचित माननीय मुख्यमंत्री हेमंत विश्व शर्मा से मुलाकात कर उन्हें बधाई एवं ब्रह्माकुमारीज के रिट्रीट सेंटर के निर्माण में सहयोग के लिए उन्हें धन्यवाद देने के पश्चात् उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी,उपक्षेत्रीय संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़,राजयोगिनी ब्र.कु. जोनाली,संचालिका,नलबाड़ी,बरपेटा तथा बस्का सेवाकेन्द्र, ब्र.कु. विजय गुप्ता,चेयरमैन,असम फाइनेंशियल कॉर्पोरेशन लि.,गुवाहाटी, ब्र.कु. मौसमी,संचालिका,न्यू गुवाहाटी सेंटर, ब्र.कु. पंचतपा, ब्र.कु. उद्धव सेकिया तथा ब्र.कु. रोमेन भाई।

भरतपुर-रूपबास(राज.)। सेवाकेन्द्र के प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर अमरसिंह जाटव,विधायक,बयाना-रूपबास को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता बहन।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। सिंचाई विभाग एवं ब्रह्माकुमारीज द्वारा अम्बेडकर पार्क में आयोजित सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम में वृक्षारोपण करते हुए,ब्र.कु. प्रेमलता बहन,चरखी दादरी, ब्र.कु. हेमलता बहन,इगलास, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन, ब्र.कु. नीतू, ब्र.कु. स्नेहा, ब्र.कु. वर्षा, ब्र.कु. कोमल, ब्र.कु. दिनेश एवं सिंचाई विभाग की ओर से जे.ई. रविशंकर, किशन मिश्र, जितेन्द्र सिंह तथा मुन्नी लाल।

कथा सरिता

एक महात्मा के एक शिष्य भिक्षु बनने के पहले राजकुमार था। दीक्षा ग्रहण करते ही वह उग्र तपस्या में लीन हो गया। तन की सुधी को भी भूलकर वह मात्र तप करता रहा। परिणाम स्वरूप उसका शरीर सूखकर हड्डी का ढांचा मात्र रह गया।

एक दिन महात्मा की नज़र उस भिक्षु पर पड़ी। उन्होंने उसे नज़दीक बुलाया और कहा वत्स, जब तुम राजकुमार थे तब तुम वीणा बहुत अच्छी बजाया करते थे। आज भी एक राग बजाओ।

उन्होंने एक भिक्षु से वीणा मंगाकर उसे दी। उसने कहा महात्मा इसके तार बहुत ही ढीले हैं इसको कसना आवश्यक है। महात्मा बोले लाओ मैं वीणा के तारों को कस दूँ, फिर तुम बजाना। जब दोबारा वीणा शिष्य के हाथों में आई तो वह उलझन में पड़ गया और बोला महात्मा यह अब भी संगीत उत्पन्न करने की दशा में नहीं है। इन तारों को मध्य में रखने से या संतुलन में रखने से ही वीणा के स्वर झंकृत होंगे। इसको यदि अभी बजायेंगे तो सभी तार टूट जायेंगे क्योंकि यह अत्यधिक कसा हुआ है।

महात्मा ने कहा वत्स ठीक इसी प्रकार यह जीवन भी वीणा के तार की तरह है। जीवन वीणा से आनंद, सुख, शांति और प्रेम के स्वर भी तभी झंकृत होंगे जब वह मध्य में अर्थात् संतुलित हो।

संतुलन ही समृद्धि और शांत जीवन का राज है। जीवन के विभिन्न पहलुओं में जब तक संतुलन नहीं होगा तब तक हम सफल नहीं हो सकते। जीवन का लक्ष्य बीच में ही छूट जाता है।

यदि हम एक नज़र चारों तरफ दौड़ाते हैं तो पाते हैं कि किसी भी सफल उद्योगपति, वैज्ञानिक, चित्रकार, साहित्यकार या कोई भी राजनीतिज्ञ व आध्यात्मिक जीवन के उच्च शिखर पर पहुंचने वाले, सभी का जीवन संतुलित होता था। उस विशेष कार्य की कामयाबी में उनके सभी आंतरिक गुणों और शक्तियों में एक सही तालमेल था।

बहुत-सी मानसिक शक्तियाँ और गुण हैं जिन्हें हमें व्यवस्थित करना होगा। जैसे स्वाभिमान और गर्व होना चाहिए लेकिन घमंड और अहंकार नहीं, मितव्ययी तो होना चाहिए परंतु कंजूस नहीं, अटल संकल्पवान तो होना चाहिए परंतु जीवन में अड़ियल और जिद्दी रवैया ठीक नहीं, शांति और धैर्य तो होना चाहिए किंतु सुस्त और आलसी नहीं इत्यादि।

जीवन में संतुलन की आवश्यकता

इसके लिए जीवन में संतुलन की शक्ति में दक्षता हासिल करना अत्यंत आवश्यक है।

परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिवान हैं। वे शक्तियों के स्रोत हैं, गुणों में अनंत हैं। जब हम आत्मिक स्थिति में स्थित होकर परमात्मा से जुड़ते हैं और अधिक से अधिक उनके सानिध्य में रहते हैं तब आत्मा न केवल संतुलन की शक्ति से भरपूर होती है वरन् उनमें दक्ष भी होती जाती है।

सांसों की कीमत

इटली में कोरोना संक्रमण से एक 93 साल का बूढ़ा व्यक्ति ठीक हुआ और जब वह अस्पताल से डिस्चार्ज होने लगा तब उसे उस अस्पताल के स्टाफ ने एक दिन के वेंटिलेटर के इस्तेमाल करने का बिल 500 यूरो थमा दिया जो किसी कारणवश छूट गया था।

जिसे देखकर वह बूढ़ा व्यक्ति जोर-जोर से रोने लगा। उसे रोते देख डॉक्टर ने उस बूढ़े व्यक्ति को कहा आप रोइए मत, यदि आप यह बिल नहीं भर सकते हैं तो जाने दीजिए।

तब उस बूढ़े व्यक्ति ने एक ऐसी बात कही जिसे सुनकर सारा स्टाफ रोने लग गया।

उसने कहा कि मैं बिल की रकम पर नहीं रो रहा और न ही मैं इसे चुकाने में असमर्थ हूँ, मैं यह बिल भर सकता हूँ।

मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि मैं 93 साल से ये सांसें ले रहा हूँ किन्तु मैंने कभी भी उसकी पेमेंट नहीं की। यदि एक दिन के सांस लेने की कीमत 500 यूरो है तो आपको पता है कि मुझे परमेश्वर को कितनी रकम चुकानी है? इसके लिए मैंने कभी भी परमेश्वर का धन्यवाद नहीं किया। परमेश्वर का बनाया हुआ यह संसार, यह शरीर, ये सांसें अनमोल हैं जिनकी पेमेंट हम उसका धन्यवाद, उसकी स्तुति, महिमा और उपासना करके कर सकते हैं। हर क्षण परमेश्वर का धन्यवाद कहो, बख्शी गई हर एक सांस के लिए...।